Programme Project Report (PPR)

पाठ्यक्रम परियोजना प्रतिवेदन

ज्योतिष में स्नातकोत्तर (MAJY)

1. **(Programme's mission & objectives) कार्यक्रम के लक्ष्य और उद्देश्य**

स्नातकोत्तर ज्योतिष पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ परम्परागत संस्थागत शिक्षा व्यवस्था का प्राय: अभाव है। इसका उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा से जोड़ना है जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित है या बीच में शिक्षा छोड़ चुके हैं। विशेषत: ज्योतिष के माध्यम से प्राच्य विद्याओं का संवर्द्धन भी प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। स्नातकोत्तर ज्योतिष पाठ्यक्रम के निम्नलिखित लक्ष्य और उद्देश्य हैं :-

- ज्योतिष में स्नातक कक्षा उत्तीर्ण शिक्षार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करना।
- ज्योतिष विषय की उच्चस्तरीय विविध विधाओं में समुचित विशेषज्ञता हासिल कराना।
- ज्योतिष की उच्च शिक्षा में बेहतर सम्भावनाओं की तलाश और उसके आधार पर शिक्षक, शोधकर्ता तथा मौलिक लेखक-विचारक के रूप में उपयोगी भूमिका का निर्वहन करने योग्य बनाना।
- विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में संस्कृत पारम्परिक विषय के ज्ञान के आधार पर सफलता प्राप्त करने योग्य बनाना।
- ज्योतिष की परम्परा के गहन अध्यापन द्वारा छात्रों का उत्तम चरित्र निर्माण, उनके हृदय में मानवीय संवेदना तथा मानवोचित विवेक एवं मूल्यों का निर्माण करना।

2. **(Relevance of the program with HEI,s Mission and Goals) कार्यक्रम की प्रासंगिकता/उपयोगिता –**

आज के समय में शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है चाहे उसका माध्यम कुछ भी हो। इस परिदृश्य में दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रही है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि यह समयबद्ध व स्थानबद्ध नहीं है। ज्योतिष एक पारम्परिक विषय है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता इस सन्दर्भ में भी ही निहित है कि यह विषय दूरस्थ प्रणाली के मध्य मानवीय मूल्य, गरिमा को प्रस्थापित कर सके। इस दृष्टि से यह विषय उच्च ज्ञान के साथ संवेदना-कौशल के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। ऐसे में परम्परागत विश्वविद्यालय के घटकों से इतर दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली के ज्योतिष विषय के विद्यार्थियों को पारम्परिक ग्रन्थों के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार माध्यमों से भी ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान को उपलब्ध कराया जाता है।

3. **(Nature of prospective target group of learners) शिक्षार्थियों के समूह की प्रकृति** -

ज्योतिष में स्नातक कक्षा उत्तीर्ण कोई भी शिक्षार्थी इस कार्यक्रम में प्रवेश की पात्रता रखता है। प्रदेश में विशेष रूप से वे भी इसमें प्रतिभाग करते है जो उच्च शिक्षा में शिक्षक बनने की आकांक्षा रखते हों। इस कार्यक्रम का लक्षित शिक्षार्थी समूह वह व्यक्ति है जो राज्य के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहते है एवं विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन के द्वारा ज्ञान अर्जित करने एवं उसका विस्तार करने हेतु प्रयासरत है। स्नातकोत्तर ज्योतिष कार्यक्रम के द्वारा न केवल दूरस्थ क्षेत्रों को केन्द्रित किया गया है बल्कि उन जनमानस को भी इसमें सम्मिलित किया गया है जो अधिक आयु हो जाने के कारण औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। ज्योतिष विषय का यह पाठ्यक्रम उन छात्रों को केन्द्र में रखकर विकसित किया गया है जो ज्योतिष के क्षेत्र में शिक्षक, शोधकर्ता, शास्त्रज्ञ, परम्परागत विद्वान, के रूप में तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्र में अपने को स्थापित करना चाहते हैं किन्तु

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से ज्योतिष शास्त्र की उच्च शिक्षा से वंचित हैं या बीच में ही अपनी शिक्षा छोड़ चुके हैं। ज्योतिष विषय के शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित स्वअध्ययन पाठ्यसामग्री, दृश्य एवं श्रृव्य व्याख्यान, परामर्श सत्रों, कार्यशालाओं, सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार के माध्यम से बिना किसी बन्धन के कहीं भी, कभी भी ज्ञान अर्जित कर सकता है।

4. **(Appropriateness of Programme to be conducted in open and distance learning mode to acquire specific skills and competence) दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में विशिष्ट कौशल व योग्यतावर्धन में पाठ्यक्रम की उपयुक्तता –**

- कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट संचार आदि माध्यमों की सहायता से विषय को शिक्षार्थी तक पहुँचाना।
- समय-समय पर विषय विशेषज्ञों की राय से पाठ्यक्रम में नवीनता स्थापित करना।
- सक्षम लेखकों द्वारा अध्ययन सामग्री को अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करके नवीन पद्धति से शिक्षार्थी को अधिगम कराना।
- सामग्री में ही छात्र और शिक्षक के बीच व्यावहारिक संवादों की उपस्थिति से विषय बोध कराना।

5. **(Instructional Design) निर्देशात्मक रूपरेखा** – ज्योतिष विषय का इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत त्रिस्कन्ध ज्योतिष (गणित, फलित एवं संहिता), बहुस्कन्धात्मक ज्योतिष, व्यावहारिक ज्योतिष, वास्तु ज्योतिष आदि को सम्मिलित किया गया है। ज्योतिष विषय के पाठ्यक्रम की अवधि न्यूनतम 2 से अधिकतम 6 वर्ष तक की होगी। पाठ्यक्रम कुल 72 श्रेयांक (प्रथम वर्ष 32 तथा द्वितीय वर्ष 40 श्रेयांक) का होगा।

क्रम.	प्रश्नपत्र	श्रेयांक	अंक	न्यूनतम समयावधि	अधिकतम समयावधि	माध्यम
	प्रथम वर्ष MAJY					
1.	भारतीय ज्योतिष का परिचय एवं इतिहास MAJY 101	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	लिखित पाठ्यसामग्री, ऑडियो-वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री
2.	सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल विवेचन MAJY 102	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	पंचांग एवं मुहूर्त MAJY 103	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	ग्रहण, वेध - यन्त्र तथा गोल परिचय MAJY 104	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
	द्वितीय वर्ष MAJY					
1.	होराशास्त्र एवं फलादेश विवेचन MAJY 201	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
2.	ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

	MAJY 202					
3.	ज्योतिष प्रबोध MAJY 203	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	
4.	संहिता स्कन्ध MAJY 204	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	
5.	ज्योतिष शास्त्र एवं यात्रा विमर्श MAJY 205	08	100	02 वर्ष	06 वर्ष	

6. (Procedure for admissions, curriculum transaction and Evaluation) प्रवेश, पाठ्यक्रम वितरण एवं मूल्यांकन विधि –

प्रवेश ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन दो सत्रों में होता है।

क. प्रवेश योग्यता - स्नातक (ज्योतिष में)

पाठ्यक्रम अवधि - 2 वर्ष से 6 वर्ष

पाठ्यक्रम माध्यम - हिन्दी

पाठ्यक्रम श्रेयांक - 72

शुल्क संरचना -

वर्ष	प्रवेश शुल्क	परीक्षा शुल्क	Student welfare & Identity Card	कुल धनराशि (रूपये में)
I वर्ष	3000	600	150	3750
II वर्ष	3000	750	300 (डिग्री)	4050
कुल	6000	1350	450	7800

ख. वितरण – ज्योतिष विषय का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित केवल उन्हीं अध्ययन केन्द्रों में संचालित किया जाएगा, जहाँ पर ज्योतिष विषय के शिक्षक उपलब्ध हों। विषय के सैद्धान्तिक पक्ष हेतु शिक्षार्थियों को स्वअध्ययन पाठ्यसामग्री मुद्रित रूप में दी जाएगी। दृश्य एवं श्रव्य व्याख्यान भी उपलब्ध कराएं जाऐंगे, जिनकी सहायता से शिक्षार्थी विषय को सूक्षमता एवं गहनता से समझ सकने में सक्षम हो। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरणों एवं माध्यमों से भी विषय को समझाने का प्रयास किया जाएगा। शिक्षार्थियों की समस्याओं के निराकरण हेतु परामर्श सत्रों का आयोजन किया जाएगा एवं प्रत्येक वर्ष कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाएंगी।

ग. मूल्यांकन – सत्रीय कार्यों के साथ- साथ मुख्य परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन सक्षम परीक्षकों द्वारा ही कराया जाता है, जो विश्वविद्यालय स्तर की प्रणाली में मान्य है।

7. (Requirement of the laboratory support and library Resources) पुस्तकालय सहायता – स्वनिर्मित अध्ययन सामग्री के अतिरिक्त छात्रों के विशिष्ट ज्ञानार्जन हेतु सन्दर्भ पुस्तकों की व्यवस्था विश्वविद्यालय स्तर पर की जाती है। इसके अतिरिक्त जिन केन्द्रों में ज्योतिष से सम्बन्धित प्रवेश होते हैं, वहाँ भी छात्रों के सहायतार्थ पुस्तकालय की व्यवस्था होती है।

8. (Cost estimate of the programme and the provisions) पाठ्यक्रम की अनुमानित लागत –

अ) इकाई लेखन - 171×6000 = रू0 10,26000/-

ब) इकाई संपादन - 171×3000 = रू0 5,13000/-

स) कुल - रू0 15, 39000 /-

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

9. **(Quality assurance mechanism and expected programme outcomes) गुणवत्ता प्रणाली एवं परिणाम** –

ज्योतिष विषय के इस पाठ्यक्रम के भविष्यगामी परिणाम निम्नलिखित होंगे :-

- विद्यार्थी ज्योतिष के क्षेत्र में उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त कर सकेंगे।
- ज्योतिष विषय की विविध विधाओं तथा शास्त्र की समुचित विशेषज्ञता हासिल कर सकेंगे।
- विद्यार्थी ज्योतिष विषय के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अनेक संस्थाओं में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करने में सक्षम हो सकेंगे।
- ज्योतिष शास्त्र की समुचित परम्परा के ज्ञान के पश्चात विद्यार्थी, वैज्ञानिक, विद्वान तथा शास्त्रज्ञ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे।
- धर्मगुरू के क्षेत्र में सफलता हासिल कर देश की सेवा में योगदान दे सकेंगे।
- ज्योतिष के गहन अध्यापन द्वारा छात्रों को अपने देश की संस्कृति, मूल, संस्कार-परम्परा, हृदय में मानवीय संवेदना, मानवोचित विवेक एवं मूल्यों का निर्माण सम्भव हो सकेगा।

स्व – अध्ययन सामग्री के परिवर्द्धन – संवर्द्धन हेतु समय-समय पर विषय वस्तु की समीक्षा की जायेगी तथा विषय को अधुनातन रूप में परखा जाएगा। इच्छुक विद्यार्थियों के लिए पाठयक्रम का निरन्तर प्रसार-प्रचार किया जाएगा।

एम0ए0 – ज्योतिष पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

प्रथम पत्र - भारतीय ज्योतिष का परिचय एवं इतिहास (MAJY-101)

खण्ड - 1 ज्योतिष शास्त्र का उद्भव एवं विकास

इकाई - 1 ज्योतिष शास्त्र का परिचय

इकाई - 2 ज्योतिष शास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास

इकाई - 3 ज्योतिष शास्त्र की वेदाङ्गता एवं वेदाङ्ग ज्योतिष

इकाई - 4 ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तक एवं आचार्य

इकाई - 5 ज्योतिष शास्त्र का ऐतिहासिक विवेचन

खण्ड - 2 ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख अंग

इकाई - 1 त्रि- पञ्च- बहु स्कन्धात्मक ज्योतिष विवेचन

इकाई - 2 प्रमुख स्कन्ध - सिद्धान्त

इकाई - 3 प्रमुख स्कन्ध - संहिता

इकाई - 4 प्रमुख स्कन्ध - होरा

खण्ड - 3 ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता

इकाई - 1 शैक्षणिक क्षेत्र में उपयोगिता

इकाई - 2 मानविकीय क्षेत्र में उपयोगिता

इकाई - 3 समस्याओं के समाधान में उपयोगिता

इकाई - 4 रोग निदान में ज्योतिष की भूमिका

इकाई - 5 रोगोपचार में ज्योतिष का योगदान

खण्ड - 4 ज्योतिष शास्त्र एवं भौतिक जगत

इकाई - 1 सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धान्त

इकाई - 2 प्रलय की अवधारणा

इकाई - 3 विश्व, सौरपरिवार एवं पृथ्वी

इकाई - 4 काल की अवधारणा एवं भेद

इकाई – 5 दिग् व्यवस्था एवं भेद

द्वितीय पत्र - सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल विवेचन (MAJY-102)

खण्ड - 1 सिद्धान्त स्कन्ध

इकाई – 1 सिद्धान्त ज्योतिष का परिचय एवं महत्त्व

इकाई - 2 सूर्यादि ग्रहों के भगण

इकाई - 3 ग्रहगति विवेचन

इकाई - 4 भूव्यास एवं स्पष्ट भूपरिधि विवेचन

इकाई - 5 भूगोल स्वरूप विवेचन

खण्ड - 2 काल विवेचन

इकाई - 1 काल स्वरूप

इकाई - 2 अमूर्त्त काल विवेचन

इकाई – 3 मूर्त्त काल विवेचन

इकाई – 4 ग्रहकक्षा एवं भचक्र व्यवस्था

खण्ड - 3 नवविध कालमान विवेचन

इकाई - 1 ब्राह्म, दिव्य एवं पैत्र्य मान विवेचन

इकाई - 2 प्राजापत्य, बार्हस्पत्य एवं सौरमान

इकाई - 3 सावन, चान्द्र एवं नाक्षत्र मान

इकाई – 4 अहोरात्र व्यवस्था

इकाई – 5 अधिमास एवं क्षयमास

खण्ड – 4 ग्रहानयन

इकाई - 1 अहर्गण एवं मध्यम ग्रहसाधन

इकाई – 2 मन्दफल एवं शीघ्रफल

इकाई - 3 उदयान्तर, देशान्तर एवं भुजान्तर संस्कार

इकाई - 4 क्रान्ति एवं चरान्तर विवेचन

इकाई - 5 ग्रहस्पष्टीकरण

तृतीय पत्र - पंचांग एवं मुहूर्त्त (MAJY-103)

खण्ड - 1 पंचांग परिचय

कुल सचिव
... विश्वविद्यालय
... (नैनीताल)

इकाई - 1 पंचांग का स्वरूप एवं संक्षिप्त इतिहास

इकाई - 2 पंचांग निर्माण की परम्परा

इकाई - 3 पंचांग के अंग एवं सिद्धान्त

इकाई - 4 दृक्सिद्ध पंचांग का महत्व

इकाई - 5 पंचांग की उपयोगिता

खण्ड - 2 पंचांग साधन एवं प्रकार

इकाई - 1 तिथि साधन

इकाई – 2 वार साधन

इकाई - 3 नक्षत्र साधन

इकाई - 4 योग साधन

इकाई - 5 करण साधन

खण्ड - 3 मुहूर्त विचार की आवश्यकता एवं संस्कार

इकाई - 1 मुहूर्त परिचय, पंचांग का शुभाशुभत्व विवेचन

इकाई – 2 संस्कार परिचय एवं आवश्यकता

इकाई - 3 गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन एवं नामकरण मुहूर्त

इकाई - 4 कर्णवेध, अन्नप्राशन एवं चूड़ाकर्म मुहूर्त

इकाई - 5 अक्षराम्भ, विद्यारम्भ, उपनयन एवं विवाह मुहूर्त

इकाई - 6 वधूप्रवेश, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश एवं यात्रा मुहूर्त

खण्ड - 4 व्रत पर्व एवं उत्सवों का धर्मशास्त्रीय निर्णय

इकाई - 1 प्रतिपदा से पंचमी तिथिपरक निर्णय

इकाई - 2 षष्ठी से दशमी तिथिपरक निर्णय

इकाई - 3 एकादशी से पूर्णिमा/ अमावस्या तिथिपरक निर्णय

इकाई - 4 वारपरक व्रत का निर्णय

इकाई – 5 नक्षत्र, योग एवं करण परक निर्णय

इकाई – 6 श्राद्ध परिचय

चतुर्थ पत्र - ग्रहण, वेध - यन्त्र तथा गोल परिचय (MAJY- 104)

खण्ड - 1 ग्रहण विचार

इकाई - 1 ग्रहण परिचय

इकाई - 2 सूर्य एवं चन्द्रग्रहण विचार

इकाई - 3 भूभा, पात (राहु) एवं ग्रास विचार

इकाई - 4 शर एवं वलन

इकाई - 5 लम्बन एवं नति

खण्ड - 2 चन्द्रश्रृंगोन्नति एवं उदयास्तादि विचार

इकाई - 1 चन्द्रश्रृंगोन्नति विचार

कुल सचिव
... मुक्त विश्वविद्यालय
... (नैनीताल)

इकाई - 2 ग्रहोदयास्त विमर्श

इकाई - 3 ग्रहयुति एवं पातविचार

इकाई - 4 दृक्कर्म परिचय

खण्ड - 3 वेध एवं यन्त्र परिचय

इकाई - 1 भारतीय वेध परम्परा एवं वेधशाला विवेचन

इकाई - 2 यन्त्रों का परिचय

इकाई - 3 प्रमुख यन्त्रों का नाम व उपयोग

इकाई - 4 प्राच्य एवं अर्वाचीन यन्त्रों का विवेचन

खण्ड - 4 गोल परिचय

इकाई - 1 गोल परिचय एवं प्रयोजन

इकाई - 2 विविध आभासिक वृत्तादि की परिभाषा

इकाई - 3 क्रान्ति एवं परम क्रान्ति विवेचन

इकाई – 4 द्युज्या, कुज्या, त्रिज्या, सूत्र, वित्रिभ, सत्रिभ आदि का विवेचन

एम0ए0 - द्वितीय वर्ष

प्रथम पत्र - होराशास्त्र एवं फलादेश विवेचन (MAJY-201)

खण्ड - 1 होरा स्कन्ध

इकाई - 1 नक्षत्र एवं ग्रह स्वरूप, उच्च - नीच, मूलत्रिकोणादि विवेचन

इकाई - 2 राशि प्रभेद एवं स्वरूप विवेचन

इकाई - 3 ग्रह, भाव एवं कारकत्व विचार

इकाई - 4 ग्रहदृष्टि एवं ग्रहमैत्री विचार

इकाई - 5 ग्रह, भावबल परिचय एवं साधन

खण्ड - 2 वर्ग एवं अवस्था

इकाई - 1 षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग विवेचन

इकाई -2 षोडश वर्ग विवेचन

इकाई -3 ग्रहों की अवस्था का विचार

इकाई - 4 विंशोपक बल साधन

खण्ड - 3 अरिष्ट एवं अरिष्टभंग निर्णय

इकाई - 1 अरिष्टयोग विचार

इकाई - 2 अरिष्ट भंग योग विचार

इकाई - 3 अरिष्ट योगों का निदान

इकाई - 4 आयु विचार एवं साधन

खण्ड - 4 फलादेश विवेचन

कुल सचिव

इकाई - 1 पंचांग फल विचार

इकाई - 2 भावफल विचार

इकाई - 3 भावेश फल

इकाई - 4 द्विग्रहादि योग फल

इकाई - 5 दृष्टि एवं कारकांश फल

इकाई - 6 अप्रकाशग्रह फल

द्वितीय पत्र - ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार (MAJY-202)

खण्ड - 1 विविध योग विचार

इकाई – 1 नाभस योग विचार

इकाई - 2 राज योग

इकाई - 3 चन्द्रादि योग

इकाई - 4 दारिद्र्य योग

इकाई - 5 मारक योग

खण्ड - 2 दशा साधन

इकाई - 1 विंशोत्तरी दशा साधन

इकाई – 2 अष्टोत्तरी दशा साधन

इकाई - 3 योगिनी दशा साधन

इकाई - 4 अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा

इकाई - 5 सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा

खण्ड - 3 दशा फल विचार

इकाई - 1 महादशा दशा फल विचार

इकाई - 2 अन्तर्दशाफल विचार

इकाई - 3 प्रत्यन्तर्दशा फल विचार

इकाई - 4 सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार

इकाई - 5 प्राणदशा फल विचार

खण्ड - 4 प्रकीर्ण फल विवेचन

इकाई - 1 पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष फल विचार

इकाई - 2 सत्वादि गुणफल

इकाई - 3 मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण

इकाई - 4 शकुन फल विचार

इकाई – 5 शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

तृतीय पत्र - ज्योतिष प्रबोध (MAJY-203)

खण्ड - 1 दिगयनांशपलभादि साधन

कुल सचिव

इकाई - 1 दिक् साधन

इकाई - 2 अयनांश विमर्श

इकाई - 3 पलभा एवं चरखण्डानयन

इकाई - 4 लग्नानयन

इकाई - 5 अक्षक्षेत्र परिचय

खण्ड - 2 प्रमुख ज्योतिर्विदों का जीवन परिचय

इकाई - 1 आचार्य लगध, आर्यभट्ट एवं वराहमिहिर

इकाई - 2 लल्ल, ब्रह्मगुप्त, वटेश्वर एवं श्रीपति

इकाई - 3 भास्कराचार्य, मकरन्दाचार्य, केशवाचार्य एवं गणेश दैवज्ञ

इकाई - 4 कमलाकर भट्ट, बापूदेव शास्त्री एवं सुधाकर द्विवेदी

इकाई - 5 नीलाम्बर झा, सामन्तचन्द्रशेखर, मुरलीधर ठाकुर, गंगाधर मिश्र

खण्ड - 3 ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त

इकाई - 1 भूभ्रमण सिद्धान्त

इकाई - 2 भू - आकर्षण सिद्धान्त

इकाई - 3 पृथ्वी का गोलत्व

इकाई – 4 परिधि व्यास सम्बन्ध

इकाई – 5 बौधायन परिमेय

इकाई – 6 शून्य एवं दार्शनिक प्रणाली

खण्ड - 4 अष्टक वर्ग विवेचन

इकाई - 1 अष्टकवर्ग की अवधारणा

इकाई - 2 भिन्नाष्टक वर्ग निर्माण

इकाई - 3 समुदयाष्टक वर्ग निर्माण विधि

इकाई - 4 अष्टक वर्ग फल विवेचन

चतुर्थ पत्र - संहिता स्कन्ध (MAJY-204)

खण्ड - 1 संहिता स्कन्ध

इकाई - 1 संहिता ज्योतिष का परिचय

इकाई - 2 दैवज्ञ लक्षण विवेचन

इकाई – 3 ग्रहचार विवेचन

इकाई - 4 ग्रहवर्ष फल विवेचन

इकाई - 5 नक्षत्र गत पदार्थ विश्लेषण

खण्ड - 2 वृष्टि एवं आपदा

इकाई - 1 वृष्टि के कारक

इकाई – 2 मेघ गर्भ लक्षण

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

इकाई - 3 वृष्टि विचार एवं वृष्टि भंग योग

इकाई - 4 प्राकृतिक आपदा का विवेचन

इकाई - 5 दकार्गल विचार

खण्ड - 3 विभिन्न चार फल विचार

इकाई - 1 रवि, चन्द्र, भौम, बुधचार फल

इकाई - 2 गुरू, शुक्र, शनि, राहु, केतु चारफल

इकाई - 3 अगस्त्य चार फल

इकाई - 4 सप्तर्षिचारा फल

खण्ड - 4 वास्तु विचार

इकाई - 1 वास्तुशास्त्र का स्वरूप प्रवर्तक एवं आचार्य

इकाई – 2 वास्तुपुरूष की अवधारणा

इकाई – 3 भूमि लक्षण शोधन

इकाई – 4 खात, वास्तु पद विन्यास, पिण्ड निर्माण एवं द्वार विन्यास

इकाई - 5 गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश मुहूर्त

इकाई – 6 गृहसमीप वृक्षादि विवेचन

पंचम पत्र - ज्योतिष शास्त्र एवं यात्रा विमर्श (MAJY-205)

खण्ड - 1 ग्रहराशियों का प्रभाव

इकाई - 1 ग्रहराशि एवं मानव जीवन

इकाई - 2 ग्रहराशि एवं वानस्पतिक जीवन

इकाई - 3 वृष्टि एवं कृषि विज्ञान

इकाई – 4 ज्योतिष और योग शास्त्र

खण्ड - 2 यात्रा मुहूर्त्त

इकाई - 1 यात्रा मुहूर्तादि परिचय

इकाई - 2 तिथि नक्षत्र शुद्धि

इकाई - 3 वार एवं लग्न शुद्धि

इकाई - 4 घात विचार

इकाई - 5 यात्रा में शकुन विचार

इकाई - 6 यात्रा में कृत्याकृत्य विचार

खण्ड - 3 यात्रा में शुद्धि विचार

इकाई - 1 गुरू एवं शुक्र विचार

इकाई - 2 यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार

इकाई - 3 यात्रा काल में दिक्शुद्धि आदि विचार

इकाई - 4 त्रिविधयात्रा में शुद्धि विचार

इकाई - 5 यात्रा काल में भाव फल

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)